



## दैनिक संपादकीय विश्लेषण

विषय

---

अति-केन्द्रीकरण से संघीय स्वास्थ्य नीति को  
खतरा

---

## अति-केन्द्रीकरण से संघीय स्वास्थ्य नीति को खतरा

### सन्दर्भ

- हाल के रुझान स्वास्थ्य नीति निर्माण में बढ़ते केन्द्रीकरण का संकेत देते हैं, जिससे राज्यों की स्वायत्तता और संघीय स्वास्थ्य नीतियों की प्रभावशीलता के बारे में चिंताएँ बढ़ रही हैं।

### भारत के स्वास्थ्य शासन के बारे में

- यह एक अर्ध-संघीय संचना का अनुसरण करता है, जहाँ केंद्र और राज्य सरकारों दोनों जिम्मेदारियाँ साझा करती हैं।
- भारतीय संविधान के अंतर्गत, स्वास्थ्य एक राज्य विषय है, जिसका अर्थ है कि स्वास्थ्य सेवा प्रदान करने की प्राथमिक जिम्मेदारी राज्यों की है।
  - हालाँकि, केंद्र सरकार नीतिगत ढाँचों, वित्त पोषण और राष्ट्रीय स्वास्थ्य कार्यक्रमों के माध्यम से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

### स्वास्थ्य नीति के केन्द्रीकरण की प्रमुख घटनाएँ

- स्नातकोत्तर चिकित्सा प्रवेश में निवास-आधारित आरक्षण को समाप्त करना:** हाल ही में, भारत के उच्चतम न्यायालय ने संविधान के अनुच्छेद 14 का उल्लंघन करने के कारण स्नातकोत्तर (PG) चिकित्सा प्रवेश में निवास-आधारित आरक्षण को असंवैधानिक घोषित किया।
  - यह निर्णय योग्यता के सिद्धांत और समानता के संवैधानिक अधिकार पर आधारित है।
- राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (2005) की शुरूआत:** राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) की शुरूआत 2005 में की गई थी, जिसे बाद में शहरी क्षेत्रों को शामिल करने के लिए राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन (NHM) के रूप में विस्तारित किया गया।
  - इसने केंद्र सरकार को राज्यों में स्वास्थ्य सेवाओं के वित्तपोषण और उन्हें आकार देने में एक मजबूत भूमिका दी।
  - जबकि राज्यों के पास अभी भी कार्यान्वयन की जिम्मेदारियाँ थीं, वित्तपोषण आवंटन और दिशा-निर्देश काफी हद तक केंद्र द्वारा नियंत्रित थे।
- महामारी अधिनियम और आपदा प्रबंधन अधिनियम:** ऐसे कानून जो केंद्र को सार्वजनिक स्वास्थ्य आपात स्थितियों में हस्तक्षेप करने का अधिकारदेते हैं।
- आयुष्मान भारत डिजिटल मिशन:** एकीकृत स्वास्थ्य डेटाबेस के लिए लक्ष्य रखते हुए, इसके कार्यान्वयन के लिए मजबूत राज्य सहयोग की आवश्यकता है।
  - हालाँकि, राज्यों के पास इसके डिजाइन और डेटा-साझाकरण तंत्र पर सीमित नियंत्रण है।
- आयुष्मान भारत (2018):** यह आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्गों को माध्यमिक और तृतीयक स्वास्थ्य सेवा के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
  - इस योजना ने राज्य द्वारा संचालित स्वास्थ्य बीमा कार्यक्रमों की भूमिका को कम कर दिया, जिससे स्वास्थ्य सेवा के वित्तपोषण और सेवा वितरण पर केंद्र का प्रभाव बढ़ गया।
- राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC) अधिनियम (2019):** भारतीय चिकित्सा परिषद (MCI) को राष्ट्रीय चिकित्सा आयोग (NMC) से बदल दिया गया।

- केंद्र ने चिकित्सा शिक्षा और लाइसेंसिंग पर अधिक नियंत्रण प्राप्त किया, जिससे चिकित्सा संस्थानों को विनियमित करने में राज्य का अधिकार कम हो गया।
- **एक राष्ट्र, एक स्वास्थ्य प्रणाली दृष्टिकोण:** राज्य और केंद्रीय स्वास्थ्य बीमा योजनाओं को एकीकृत करने के लिए एक प्रस्तावित रूपरेखा। राज्यों को स्वास्थ्य वित्तपोषण और सेवा वितरण पर स्वायत्तता खोने का भय है।

### अति-केन्द्रीकरण संघीय स्वास्थ्य नीति को कैसे कमज़ोर करता है?

- **स्थानीय स्वास्थ्य आवश्यकताओं को संबोधित करने में सीमित लचीलापन:** जनसांख्यिकी, बीमारी के भार और बुनियादी ढाँचे में अंतर के कारण राज्यों में स्वास्थ्य संबंधी चुनौतियाँ व्यापक रूप से भिन्न हैं।
  - केंद्र द्वारा लागू किया गया एक-आकार-फिट-सभी दृष्टिकोण प्रायः स्थानीय प्राथमिकताओं की अनदेखी करता है। उदाहरण के लिए: केरल जैसे राज्यों को वृद्ध जनसंख्या पर ध्यान केंद्रित करने वाली नीतियों की आवश्यकता है, जबकि बिहार और उत्तर प्रदेश को मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर अधिक ध्यान देने की आवश्यकता है।
  - राज्य-विशिष्ट अनुकूलन के बिना समान योजनाएँ लागू करने से स्वास्थ्य सेवा के परिणाम कमज़ोर होते हैं।
- **स्वास्थ्य सेवा शासन में राज्य की स्वायत्तता में कमी:** केन्द्रीकरण के कारण राज्यों ने प्रमुख स्वास्थ्य योजनाओं में निर्णय लेने की शक्ति खो दी है।
  - AB-PMJAY इसका स्पष्ट उदाहरण है जहाँ स्वास्थ्य सेवा राज्य का विषय होने के बावजूद राज्यों के पास कार्यान्वयन में सीमित लचीलापन है।
  - कई राज्यों ने अपने स्वयं के बीमा मॉडल को प्राथमिकता दी, फिर भी उन्हें केंद्रीय निर्देशों के साथ सामंजस्य बिठाना पड़ा।
- **नौकरशाही देरी और अक्षमता:** धन और अनुमोदन के लिए केंद्र पर अत्यधिक निर्भरता अक्सर नौकरशाही बाधाओं का कारण बनती है।
  - राज्यों ने NHM के अंतर्गत धन वितरण में विलंब की सूचना दी है, जिससे स्वास्थ्य कार्यक्रमों का समय पर क्रियान्वयन प्रभावित होता है।
  - कोविड-19 महामारी के दौरान, वैक्सीन वितरण और ऑक्सीजन की आपूर्ति प्रारंभ में बहुत अधिक केंद्रीकृत थी, जिससे लॉजिस्टिक चुनौतियों और देरी का सामना करना पड़ा।
- **केंद्र पर वित्तीय निर्भरता:** राज्य स्वास्थ्य सेवा के वित्तपोषण के लिए केंद्र प्रायोजित योजनाओं (CSS) पर बहुत अधिक निर्भर हैं।
  - 15वें वित्त आयोग के स्वास्थ्य अनुदानों की आलोचना इस बात के लिए की गई है कि इसमें राज्यों को संसाधनों को कैसे खर्च करना चाहिए, इस पर केंद्रीय शर्तें लगाई गई हैं।
- **बुनियादी स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य प्रणालियों का कमज़ोर होना:** प्रभावी सेवा वितरण के लिए मजबूत राज्य और स्थानीय स्वास्थ्य प्रणालियाँ महत्वपूर्ण हैं।
  - अत्यधिक केन्द्रीकरण प्रायः राज्य के स्वास्थ्य विभागों और पंचायतों और नगर निकायों जैसे स्थानीय शासन संरचनाओं को दरकिनार कर देता है, जो बुनियादी स्तर पर सार्वजनिक स्वास्थ्य का प्रबंधन करने के लिए बेहतर स्थिति में हैं।

### आगे की राह: केन्द्रीकरण और राज्य स्वायत्तता में संतुलन

- **राज्यों के लिए अधिक राजकोषीय स्वायत्तता:** क्षेत्रीय प्राथमिकताओं के आधार पर स्वास्थ्य सेवा के लिए केंद्रीय निधियों का उपयोग करने में राज्यों को अधिक लचीलापन प्रदान करना।

- राज्य-विशिष्ट नीति ढाँचे:** राज्यों को समान राष्ट्रीय नीतियाँ लागू करने के बजाय स्थानीय रणनीति विकसित करने के लिए प्रोत्साहित करना।
- राज्य स्वास्थ्य क्षमताओं और स्थानीय शासन को मजबूत करना:** राज्य स्वास्थ्य विभागों और स्थानीय शासन संरचनाओं में निवेश करने से सेवा वितरण में सुधार हो सकता है।
  - प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं को कुशलतापूर्वक प्रबंधित करने के लिए नगर पालिकाओं और पंचायतों को सशक्त बनाना।
- स्वास्थ्य नियोजन में सहकारी संघवाद:** समावेशी नीति निर्माण सुनिश्चित करते हुए केंद्र और राज्यों के बीच सहयोगात्मक निर्णय लेने के लिए तंत्र स्थापित करना।
- क्षमता निर्माण में निवेश:** राज्यों को तकनीकी और वित्तीय सहायता प्रदान करने से उन्हें अपने स्वास्थ्य सेवा बुनियादी ढाँचे और कार्यबल को मजबूत करने में सहायता मिल सकती है।

### निष्कर्ष

- स्वास्थ्य नीति में अत्यधिक केंद्रीकरण भारत के संघीय ढाँचे और इसकी स्वास्थ्य सेवा प्रणाली की प्रभावशीलता के लिए महत्वपूर्ण जोखिम उत्पन्न करता है।
- राज्य की स्वायत्तता का सम्मान करते हुए केंद्रीय समर्थन का लाभ उठाते हुए एक संतुलित दृष्टिकोण को बढ़ावा देकर, भारत एक अधिक न्यायसंगत और कुशल स्वास्थ्य सेवा प्रणाली का निर्माण कर सकता है।
- चूँकि राष्ट्र स्वास्थ्य प्रशासन की जटिलताओं का सामना कर रहा है, इसलिए अपने सभी नागरिकों का कल्याण सुनिश्चित करने के लिए सहकारी संघवाद को प्राथमिकता देना महत्वपूर्ण है।

Source: TH

### दैनिक मुख्य परीक्षा अभ्यास प्रश्न

**प्रश्न:** भारत में संघीय स्वास्थ्य नीति पर अति-केंद्रीकरण के प्रभाव का आलोचनात्मक विश्लेषण कीजिए। राज्य की स्वायत्तता, स्वास्थ्य सेवा वितरण और संसाधन आवंटन के लिए इससे उत्पन्न संभावित चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।

